संपादकीय

बदल रहे गांव

हाल के सामाजिक-आर्थिक विकास ने भारत के ग्रामीण इलाकों की तस्वीर बदल दी है। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) का सर्वेक्षण (2016-17) इस बारे में बहुत कुछ कहता है। हर तीसरे साल कराए जाने वाले इस सर्वे के मुताबिक ग्रामीण खेतिहर परिवारों की औसत आय अब कृषि से ज्यादा दैनिक मजदूरी से होने लगी है। कृषि पर आश्रित एक ग्रामीण परिवार की औसत वार्षिक आय 1 लाख 7 हजार 172 रुपये है, जबकि गैर-कृषि गतिविधियों से जुड़े ग्रामीण परिवारों की औसत वार्षिक आय 87 हजार 228 रुपये है।

रिपोर्ट के मुताबिक मासिक आमदनी का 19 प्रतिशत हिस्सा कृषि से आता है, जबकि औसत आमदनी में दैनिक मजदूरी का हिस्सा 40 फीसदी से अधिक है। 87 फीसदी ग्रामीण घरों में अब मोबाइल आ चुका है जबकि 88.1 फीसदी परिवारों के पास बचत खाते हैं। 58 फीसदी परिवारों के पास आज टीवी है वहीं 34 फीसदी परिवारों के पास मोटरसाइकिल और 3 फीसदी परिवारों के पास कार है। इसके अलावा 2 फीसदी परिवार लैपटॉप और एसी से लैस हैं। खेती-किसानी करने वाले 26 फीसदी और गैर-कृषि क्षेत्र के 25 फीसदी परिवार बीमा के दायरे में हैं। पेंशन योजना सिर्फ 20.1 फीसदी कृषक परिवारों ने ली है वहीं, सिर्फ 18.9 फीसदी गैर खेतिहर परिवारों के पास पेंशन योजना है।

इस सर्वेक्षण पर किसानों के कुछ संगठनों ने सवाल उठाए हैं। उनके अनुसार सर्वे में किसानों की परिभाषा बदल कर आंकड़े जुटाए गए हैं। 2012-13 के आंकड़े एनएसएसओ या नेशनल सैंपल सर्वे में एकत्र किए गए थे तब उस परिवार को कृषक परिवार माना गया था जिसे केवल खेती से 3 हजार रुपये तक की आमदनी मिलती हो। वहीं इनकी तुलना 2015-16 के जिन आंकड़ों से की गई उनमें खेती से 5 हजार कमाने वालों को कृषक परिवार का दर्जा दिया गया है। इसलिए इस बार आमदनी ज्यादा दिख रही है।

बहरहाल यह सर्वे कई स्तरों पर चिंता में भी डालता है। इसमें कहा गया है कि ग्रामीण क्षेत्र के 47 फीसदी परिवारों पर कर्ज का बोझ है। जाहिर है खेती से अपेक्षित लाभ नहीं हो पा रहा है। यही वजह है कि किसानों को मजदूरी भी करनी पड़ रही है। दूसरी बात यह है कि आय का स्तर भी असमान है। पंजाब के ग्रामीण परिवार की औसत आय 16 हजार 20 रुपये है जबकि आंध्र प्रदेश के ग्रामीण परिवार की महज 5 हजार 842 रुपये। हालांकि सबसे ज्यादा आय भी शहरों की आय से काफी कम है।

साफ है कि गांव में आई समृद्धि सीमित है। इसे बढ़ाने और इसके समान रूप से प्रसार की जरूरत है। भूमंडलीकरण के बाद सारा ध्यान बड़े उद्योग-धंधों के विकास पर केंद्रित हो गया है। ऐसे में गांवों के छोटे-मोटे उद्योग कमजोर पड़े हैं। आज कृषि में निवेश बढ़ाने और गांवों में लघु व कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने की जरूरत है ताकि ग्रामीणों की आमदनी बढ़ सके।

इसरो के मानव मिशन से जगी उम्मीदें

स्पेस में जाने वाले पहले भारतीय राकेश शर्मा से अक्सर लोग पूछा करते थे कि क्या उनकी अंतरिक्ष में भगवान से मुलाकात हुई। इस पर उनका जवाब होता था कि नहीं, उन्हें वहां भगवान नहीं मिले। अब जबकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त को लालकिले से यह ऐलान किया है कि आज़ादी के 75वें साल 2022 में भारत पहली बार अपने किसी बेटे या बेटी को अंतरिक्ष में भेजेगा तो सवाल उठ रहा है कि भारत ऐसा करके आखिर क्या हासिल करने जा रहा है।

बहरहाल, प्रधानमंत्री के ऐलान के बाद इसरो प्रमुख के. सिवन ने स्पष्ट किया है कि यह अभियान इसरो के मानव मिशन 2022 का हिस्सा होगा और इस पर 10 हजार करोड़ रुपये से कम खर्च आएगा। इस मिशन पर कम से कम सात दिनों के लिए किसी यात्री को अंतरिक्ष में रहना होगा। इसके लिए बनाए जाने वाले अंतरिक्ष यान-गगनयान में उड़ान भरने वाले अंतरिक्ष यात्री का चयन भारतीय वायुसेना द्वारा किया जाएगा और उन्हें स्पेस फ्लाइट की ट्रेनिंग विदेशों में दी जाएगी। इस मानव-मिशन को अंजाम पर पहुंचाने से पहले मिशन में इस्तेमाल होने वाले रॉकेट जियोसिन्क्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल मार्क-3 (जीएसएलवी-एमके-3) से कम से कम दो मानवरहित उड़ानें होंगी। सबसे अहम यह है कि यह अभियान स्वदेशी होगा। इसरो के मुताबिक वह इसकी कुछ टेक्नोलॉजी विकसित कर चुका है। जैसे इसरो ने पहले ही क्रू मॉड्यूल और स्केप सिस्टम का परीक्षण कर लिया है। शेष तैयारियां अगले कुछ चरणों में पूरी हो जाएंगी। इसरो ने मंगलयान के अलावा अपने रॉकेटों में भारी विदेशी उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित करके जो प्रतिष्ठा हासिल की है, उसे देखते हुए गगनयान से किसी भारतीय को स्पेस में भेजने का उसका सपना नामुमकिन नहीं लगता। पर अहम सवाल यही है कि क्या उसे इस कारनामे की जरूरत है। उल्लेखनीय है कि एक भारतीय के तौर पर स्कवाड्रन लीडर राकेश शर्मा वर्ष 1984 में ही यह उपलब्धि हासिल कर चुके हैं। दो रूसी अंतरिक्ष यात्रियों के साथ सोवियत संघ के सोयूज टी-11 से 2 अप्रैल, 1984 को अंतरिक्ष में पहुंचकर यह सलाम देश-दुनिया को दे चुके हैं कि अंतरिक्ष से देखने पर भारत सारे जहां से अच्छा दिखता है। राकेश शर्मा ऐसा कारनामा करने वाले दुनिया के 128वें इनसान थे और उनके बाद नासा की बदौलत दर्जनों यात्री अंतरिक्ष में जा चुके हैं। यहां तक कि दुनिया में प्राइवेट स्पेस टूर जैसी चीजें शुरू हो चुकी हैं और आने वाले कुछ वर्षों में इसके बेहद आम हो जाने का अनुमान है।

फिर भी सुरम्यता कायम

इकबाल अभिमन्यु

जिस इलाके की यहां चर्चा कर रहा हूं, बेशक वहां के कई अजीब पहलू हों, लेकिन कुदरत की पूरी मेहरबानी है। यह है रामपुरा। अरावली के दक्षिणी छोर पर पहाड़ के नीचे बसा। मध्यकाल में उत्तर-पश्चिम से दक्षिण की ओर आते कारवां यहां ठहरते थे। उस दौर की समृद्धि की कहानियां अब यहां के खंडहर बयां करते हैं।

यह इलाका मूल रूप से भीलों का रहा है। उन्हीं में से एक सरदार रामा भील ने इस गांव को बसाया। बाद में जैसे-जैसे ताकतवर राजपूत और अन्य मैदानी जातियों का प्रभुत्व बढ़ा, भील पहाड़ के ऊपर के गांवों की और खिसकते गए। आज इनके सामने संकट है। जंगल बहुत कम हो गए हैं। खेती की ज़मीन इनके पास नहीं के बराबर है। मजदूरी कर जैसे - तैसे अपना काम चलाते हैं। संस्कृति के स्तर पर भी इस इलाके में इनकी भाषा बहुत पहले विलुप्त हो गयी है और प्रकृति पूजन के रीति रिवाज, भगोरिया जैसे उत्सव अब कहीं नहीं हैं। समय के साथ रामपुरा एक बड़ा व्यापारिक केंद्र बन कर उभरा। न केवल आसपास की उपजाऊ जमीन के कारण बल्कि व्यापारिक मार्ग पर होने के कारण यहां की मंडियां खूब विकसित हुई। आज भी यहां की गलियों के नाम इसकी गवाही देते हैं। तम्बाखू गली, शृंगार गली (बाद में नाम बिगड़ कर सिंघाड़ा गली हो गया), लालबाग, छोटा बाजार, बड़ा बाजार, धान मंडी जैसे मोहल्ले अब बस इतिहास के गवाह रह गए हैं।

विश्वास का रिश्ता

पाकिस्तान के नए प्रधानमंत्री इमरान खान ने रविवार को देश के नाम अपने पहले संबोधन में सरकार के सामने मौजूद चुनौतियों का जो खाका खींचा, उससे लगता है कि उन्हें कम से कम सिद्धांत रूप में पता है कि उनकी आगे की राह कितनी मुश्किलों भरी है। पाकिस्तान कर्ज के बोझ से इस कदर लद चुका है कि खुद प्रधानमंत्री इमरान खान के मुताबिक ब्याज चुकाने के लिए भी नया कर्ज लेना पड़ रहा है। इस संदर्भ में देखें तो प्रधानमंत्री आवास में न रहने और बुलेटप्रूफ कारों के काफिले को नीलाम करने जैसे उनके ऐलान नया अर्थ हासिल करते हैं। ये महज पॉप्युलिस्ट घोषणाएं नहीं, पाकिस्तान में सरकारी खर्च घटाने और सादगी की नीति लागू करने के लिए आवश्यक जमीन तैयार करने की कोशिश है।

इसी क्रम में उन्होंने टैक्स का दायरा बढ़ाने का भी संकेत दिया। उन्होंने शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य सेवाओं तक की दुर्दशा का जिक्र करते हुए इन्हें दुरुस्त करने की जरूरत और मंशा जताई। ये सारे काम ठीक से हो सकें, इसके लिए प्रधानमंत्री और सरकार की सही नीयत के साथ-साथ देश के अंदर और बाहर शांतिपूर्ण माहौल का होना भी जरूरी है। पाकिस्तानी अवाम ने देश के अंदर मौजूद अत्यधिक कट्टर और आतंकी तत्वों को इन चुनावों में ठुकरा दिया है। अब नए नेतृत्व की यह जिम्मेदारी है कि ऐसी नीतियां लाए जिससे ये तत्व दोबारा सिर उठाकर विकास प्रक्रिया को बाधित न करें। लेकिन इसका सीधा संबंध पड़ोसी देशों के प्रति पाकिस्तान सरकार की नीति से भी है।

ऐसा नहीं हो सकता कि पाकिस्तान सरकार सीमा के पार आतंकी तत्वों को बढ़ावा देती रहे और ये तत्व सीमा के अंदर शांति के दूत बने बैठे रहें। पड़ोस के घर में आग भड़काने से अपना घर भी लपटों से अछूता नहीं रहता। इमरान वक्त रहते इस बात को समझ सकें तो सबका भला होगा। बतौर क्रिकेटर वह खुद को साबित कर चुके हैं। उनके लिए मौका है, अपने देश को शांति और समृद्धि की राह पर ले जाकर वे खुद को बेहतरीन राजनेता भी साबित कर सकते हैं। यह तभी होगा जब वे भारत सहित सभी पड़ोसी देशों के साथ शांति और विश्वास का रिश्ता कायम करने में कामयाब हों।

भारत के निकट भी, दूर भी

सर विदिया भारतभूमि पर पैदा न होकर भी जन्मजात भारतीय थे। उनका पूरा नाम विद्याधर सूरजप्रसाद नायपॉल था। यह नायपॉल नेपाल से आया था और उनके पूर्वज गिरमिटिया के रूप में कैरेबियाई देश त्रिनिदाद गए थे। 17 अगस्त, 1932 को वहीं विद्याधर सूरजप्रसाद का जन्म हुआ। गरीबी और संघर्ष उन्होंने बचपन में ही देख लिया था पर उनकी मेधा इससे और भी मंजी। उन्हें पता था कि पिता के पास इतने संसाधन नहीं, सो अगर उन्हें उच्च शिक्षा पानी है, तो खुद ही पढ़ाई के लिए जरूरी रकम की व्यवस्था करनी होगी।

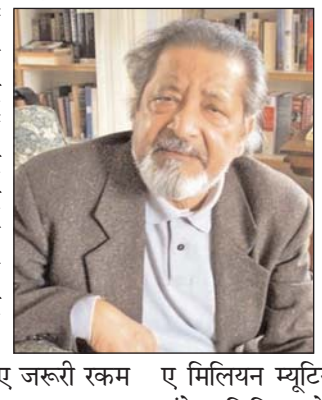

स्कूली शिक्षा में अपनी मेहनत से साल 1950 में उन्होंने एक सरकारी स्कॉलरशिप जीती, जिससे उन्हें कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटी में दाखिला मिल सकता था, लेकिन उन्होंने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी को चुना। कहते हैं छात्र जीवन में अवसाद की वजह से उन्होंने खुदकुशी करने की कोशिश भी की थी, पर ऑक्सफोर्ड में अंग्रेजी भाषा पर उन्होंने ऐसी पकड़ हासिल की कि उसने उनकी समूची दुनिया तो बदली ही, साहित्य को भी एक जाज्वल्यमान सितारा दे दिया। अपनी लेखनी के बूते उनमें पूरी दुनिया को झकझोर देने का माद्दा था।

नायपॉल का भी विवादों से गहरा नाता रहा। नायपॉल की गिनती ऐसे लेखकों में की जाती है, जिसे सच कहने से कभी गुरेज नहीं था। उन्होंने लेखन के क्षेत्र में जितना नाम कमाया वह किसी भी लेखक के लिए सपना है। उन्होंने तीस से अधिक किताबें लिखीं और भारत को अपने समस्त जुड़ाव के बावजूद उसकी कमियों के साथ देखा। नायपॉल ने भारत पर 'एन एरिया ऑफ़ डार्कनेस', 'इंडिया- ए मिलियन म्यूटिनीज नाऊ' और 'ए वुंडेड सिविलाइज़ेशन' जैसी किताबें लिखीं। 'इंडिया - ए वुंडेड सिविलाइजेशन' की भूमिका में उन्होंने लिखा, 'भारत मेरे लिए एक जटिल देश है। यह मेरा गृह देश नहीं है, सो मेरा घर भी नहीं हो सकता। लेकिन फिर भी मैं इसे न खारिज कर सकता हूं, न ही इसके प्रति उदासीन हो सकता हूं। न मैं इसके दर्शनीय स्थानों पर सिर्फ पर्यटक बनकर आता-जाता रह सकता हूं। मैं एक साथ इसके बहुत निकट हूं और दूर भी।'

उनके आलोचक उनके दक्षिणपंथी रुझान, इस्लाम विरोधी रवैये, निजी जीवन में बहुविवाह को लेकर हमला बोलते हैं।

खाना खजाना

रक्षाबंधन पर घर में ऐसे बनाएं मैदे की ये मिठाई

रेसिपी क्विज़ीन : इंडियन, डिजर्ट
कितने लोगों के लिए : 2-4
समय : 15 से 30 मिनट
मील टाइप : वेज
आवश्यक सामग्रीएक छोटी कटोरी घी
मैदा 500 ग्राम
चीनी बूरा 500 ग्राम
एक कप दूध
एक छोटा चम्मच इलायची पाउडर
एक कटोरी मेवे (काजू, बादाम, पिस्ता, किशमिश बारीक कटे)
केसर के कुछ एक लच्छे
विधि- सबसे पहले मैदे पर दूध के छींटे डालकर इसे गीला कर लें और मैदे को 1-2 घंटे दबाकर रखें.

तय समय के बाद गीले मैदे को छलनी से छान लें.

मीडियम आंच में एक पैन में तेल गरम करने के लिए रखें.

तेल के गरम होते ही छलनी को पैन के ऊपर ले जाएं.

छलनी से बारीक-बारीक बूंदी के समान मैदा निकलेगा. उसे कड़ाही में धीमी आंच में हल्का गुलाबी होने तक तलें और आंच बंदकर दें.

अब बूंदी के ठंडा होने पर इसमें चीनी बूरा मिलाकर एक और बार छलनी से छान लें.

मीडियम आंच में एक पैन में घी गरम कर इसे एक कटोरी में निकालकर रख लें.

अब मैदे और शक्क र के मिश्रण में गरम घी डाल दें. साथ ही इलायची भी पीसकर मिलाएं.

तुरंत ही इसे हथेलियों से मसलकर मिलाएं और अपने पसंदीदा शेप में जमा दें.

तैयार है मैदे की ये स्पेशल मिठाई. काजू, बादाम, पिस्ता तथा किशमिश से सजाएं.

शब्द सामर्थ्य

बाएं से दाएं

1. संघर्ष, दौड़धूप (उर्दू.) 5. सुपुत्र, लायक पुत्र 7. ताकतवर, बलशाली 9. खुशबू, सुरभि, सुगंध 10. अकारण, व्यर्थ, बेवजह 12. गर्म तेल आदि में खाद्य वस्तु छोड़कर पकाना 13. यात्रा 15. मृत, जो मर गया हो 16. छोटे कद का, वामन, बौना 18. सांप का सिर, गुण, कला, कौशल 20. निरुत्तर, बेमिसाल 23. गोल हरे दानों वाला एक प्रसिद्ध पौधा, या इस पौधे की फली 24.माता, जननी 25. संतान, औलाद 26. अधीन, अधीनस्थ, कर्मचारी 27. चिड़िया, खग तरफदार।

ऊपर से नीचे

1.पानी में डूबा हुआ, जल प्लावित 2. पाकेटमार, जेब काटने वाला 3. समाधान, खेत जोतने का यंत्र 4. औषधालय 6. युक्ति, उपाय 8. गीला, तर, भीगा हुआ 11. झटके से मुंह से आवाज के साथ हवा बाहर आना, बलगम आदि का बाहर आना 14. तुरंत, झटपट 15. स्त्री, नारी, अबला 17. एक और एक चौथाई 19. आदमखोर 21. दुनिया, संसार, जग 22. वर्ष की छः ऋतुओं में एक ऋतु जिसमें मौसम सुहावना रहता है 23. बुद्धि, दिमाग।

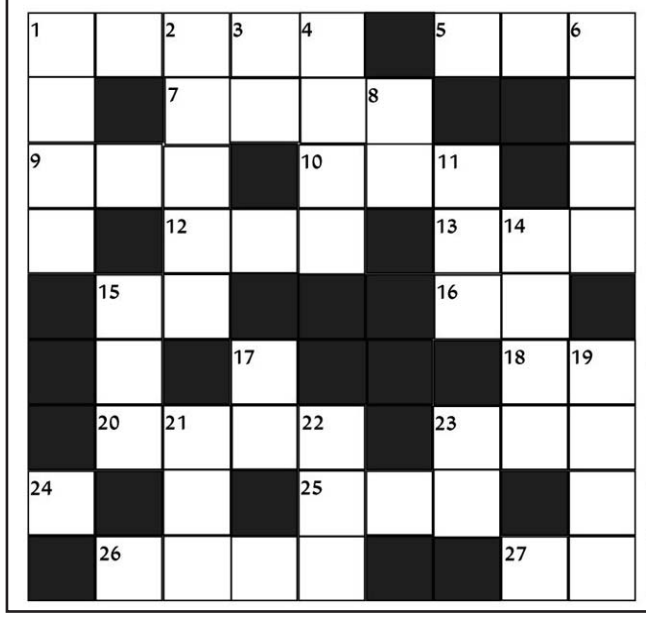

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 05 का हल

पी	चि	दं	ब	र	म	■	■	स
ट	■	भ	ला	ई	■	अ	स	म
ना	म	■	■	स	मा	धि	■	झ
■	ज	■	बे	■	न	का	र	ना
बा	बू	■	आ	य	क	र	■	■
■	र	की	ब	■	■	■	प्र	था
ज	■	■	रू	प	क	■	ज	न
हा	■	पा	■	ना	म	ची	न	■
ज	हां	प	ना	ह	■	ता	न	ना

सू-दोकू

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.05 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

राशिफल

मेषः समय प्रबंधन से आप कई रूके हुए काम कर सकते हैं। इसपर ध्यान देने की आवश्यकता है। मानसिक तनाव की स्थितियां आ सकती है।

वृषभः सहयोग और सहभागिता के साथ विरोधों का सामना करना पड़ सकता है। व्यवसाय में अत्यंत प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा।

मिथुनः आपकी मेहनत की सराहना तो होगी लेकिन शत्रुओं का आपके प्रति वैमनस्य भी बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति अपने पक्ष में रखने की कोशिश करें।

कर्कः कामयाबी का रास्ता खुल रहा है, नए संबंधों से फायदा होगा। आपका कार्यकौशल उभरकर सामने आएगा। आपको वांछित सहयोग भी मिलेगा।

सिंहः आज कहीं बाहर जाने का कार्य म बन सकता है। जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन लाने के लिए आप किसी विशेष तकनीक का इस्तेमाल करेंगे।

कन्याः कोई नया सौदा करते समय कागज़ात की अच्छी तरह से जांच-पड़ताल कर लें। कामकाज में अड़चने आएंगी। जीवनसाथी की बातों पर भी ध्यान दें।

तुलाः कानूनी मामलों का निपटान होगा, शत्रु पक्ष आपकी गतिविधियों व ऊर्जा को देखकर ही परास्त हो जाएगा। ऋणों का पुर्ण भुगतान भी होगा।

वृश्चिकः आपके जीवन में और तेजी से परिवर्तन होंगे। यदि आप नवीन कार्य योजना तैयार कर रहे हैं तो मित्रवर्ग आपकी सहायता करेंगे।

धनुः आमदनी को उच्च बनाने में समय लग सकता है। आर्थिक स्थिति कमजोर होते हुए भी काम चलता रहेगा। प्रेम संबंधों में मधुरता रहेगी।

मकरः आपके मन में उत्साह का संचार रहेगा किंतु आशंकाएं बनी रहेंगी। आपका क्रोध बनी बनाई बात को बिगाड़ सकता है।

कुंभः वर्तमान स्थितिनुसार आपके व्यवसाय में उन्नति होते दिख रही है। इस दौरान आप खरीद-फरोख्त कर सकते हैं। आकर्षण से दूसरे प्रभावित होंगे।

मीनः पारिवारिक मामलों में आप समझदारी से कार्य लें, वैवाहिक संबंधों में कटुता आ सकती है। मदिरापान से दूर रहना आपके लिए हितकर रहेगा।